उसके हाथ निराशा ही लगेगी। स्पष्ट उल्लेख है कि विनम्रभाव से शून्य बोध घातक है। अपने को ईश्वर मानना परम अभिमान का सूचक है। जीव नित्य-निरन्तर प्रकृति के दुस्तर नियमों का पाद-प्रहार खा रहा है, फिर भी अज्ञानवश मान बैठता है कि 'मैं ईश्वर हूँ।' अपने को श्रीभगवान् के आधीन जान कर सदा विनम्र रहना चाहिए। श्रीभगवान् से द्रोह करने के कारणवश ही जीव माया के अधीन हुआ है—इस सत्य को दृढ़ विश्वास सहित अवश्य धारण कर लेना चाहिए।

ज्ञेयं यत्तत्प्रवक्ष्यामि यज्ज्ञात्वामृतमश्नुते।
अनादिमत्परं ब्रह्म न सत्तन्नासदुच्यते।।१३।।

ज्ञेयम्=जानने योग्य; **यत्**=जो; **तत्**=वह; **प्रवक्ष्यामि**=(मैं) अब कहूँगा; **यत्**=जिसे; **ज्ञात्वा**=जान कर; **अमृतम्**=अमृत का; **अश्नुते**=आस्वादन करता है; **अनादि**=आदिरहित; **मत्परम्**=मेरे आधीन; **ब्रह्म**=ब्रह्म; **न**=न; **सत्**=कारण; **तत्**=वह; **न**=न; **असत्**=कार्य; **उच्यते**=कहा जाता है।

अनुवाद

अब मैं उस जानने योग्य तत्त्व का वर्णन करूँगा, जिसे जान कर तू अमृत को प्राप्त हो जायगा। यह अनादि ब्रह्मतत्त्व मेरे आधीन है और इस जगत् के कार्यकारण से परे है।।१३।।

तात्पर्य

श्रीभगवान् क्षेत्र और क्षेत्रज्ञ का वर्णन पूर्ववर्ती श्लोकों में कर चुके हैं। उन्होंने क्षेत्रज्ञ को जानने की पद्धति का भी निर्देश किया। अब वे ज्ञेय, अर्थात् जानने योग्य परमात्मा और आत्मा—दोनों का वर्णन करते हैं। जीव-क्षेत्रज्ञ और परमात्मा-क्षेत्रज्ञ के ज्ञान द्वारा जीवन के सार-स्वरूप अमृत का आस्वादन किया जा सकता है। द्वितीय अध्याय में जीवात्मा को सनातन कहा है। यहाँ भी इसकी पुष्टि है। जीव का जन्म किसी दिवस-विशेष में नहीं हुआ और न परमेश्वर से जीव की अभिव्यक्ति का कोई इतिहास ही मिलता है। इस सबसे सिद्ध होता है जीव अनादि है। वेद-प्रमाण है: **न जायते म्रियते वा विपश्चित्।** देहरूपी क्षेत्र का ज्ञाता (क्षेत्रज्ञ) कभी जन्मता-मरता नहीं; वह शाश्वत् ज्ञानस्वरूप है। वेदों में श्रीभगवान् का भी वर्णन है, **प्रधानक्षेत्रज्ञपतिर्गुणेशः।** श्रीभगवान् परमात्मारूप से देह के प्रधान क्षेत्रज्ञ (ज्ञाता) हैं और त्रिगुणमयी प्रकृति के स्वामी हैं। 'स्मृति' में कहा है, **दासभूतो हरेरेव नान्यस्यैव कदाचन।** जीव श्रीभगवान् के नित्यदास हैं। अपने शिक्षामृत में श्रीचैतन्य महाप्रभु ने भी यह प्रमाणित किया है। अस्तु, इस श्लोक में वर्णित **ब्रह्मतत्त्व** से जीवात्मा का ही निर्देश है। जीव को **विज्ञानम् ब्रह्म** कहा जाता है, जबकि परब्रह्म श्रीभगवान् **अनन्तब्रह्म** हैं।

सर्वतःपाणिपादं तत्सर्वतोऽक्षिशिरोमुखम्।
सर्वतःश्रुतिमल्लोके सर्वमावृत्य तिष्ठति।।१४।।